विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

१८/१०/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:नवम: पाठनाम -सिकतासेतु:

पुरुष: - भोस्तपस्विन्! कथं मामुपरुणत्सि।प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति?कावश्यकता शिलानां ? सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि ।स्वसंकल्पदृढतया ।

तपोदत्त: - आश्चर्यम्! सिकताभिरेव सेतुं करिष्यसि ?सिकता जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किं?भवता चिन्तितं न वा?

पुरुष: - **(**सोत्प्रासम्) चिन्तितं चिन्तितं सम्यक चिन्तितं । नाहं सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वशिमि। समुत्प्लुत्यैव गन्तुं क्षमोऽस्मि।

शब्दार्था:

उपरुणत्सि - तुम रोकते हो , सोत्प्रासम् - मजाक उड़ाते हुए

स्वसंकल्पदृढतया - अपन अविचलित संकल्प से

सोपानमार्गै: - परंपरागत तरीकों से , अट्टम् - अटारी से

अधिरोढुम् - चढ़ने के लिए , समुत्पुल्य - छलांग मार

विश्वसिमि - (मैं) विश्वास करता हूं

अर्थ- हे तपस्वी! तुम मुझे क्यों रोकते हो ?प्रयत्न करने से क्या सिद्ध नही होता ?शिलाओं की क्या आवश्यकता ?मैं रेत से पुल बनाने के लिए संकल्पबद्ध हूं ।

तपोदत्त: - आश्चर्य है! रेत से ही पुल बनाओगे ? क्या

तुमने यह सोचा है कि रेत पानी के बहाव पर कैसे ठहर पाएगी?

पुरुष: - **(**उसकी बात का खंडन करते हुए) सोचा है, सोचा है , अच्छी प्रकार से सोचा है।मैं सीढ़ियों के रास्ते से अटारी पर चढ़ने में विश्वास नहीं करता । मुझमें छलांग मारकर जाने की क्षमता है।